Impact Factor-7.675 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April -2021

ISSUE No- 291 (CCXCI) H

Women's Empowerment Issues and Challenges

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr. Bharat Bhadade
Head, Department Of Marathi
Mahatma Phule Mahavidyalaya
Kingaon, Latur,

Editor
Asst. Prof. Baliram Pawar
Head, Department of Sociology
Mahatma Phule Mahavidyalaya
Kingaon Latur Maharashtra

Editor
Dr. Prakarsh Deshmukh
Associate Professor and Head,
Dept. Of Sociology.
Bhai Kishanrao Deshmukh
Mahavidyalaya
Chakur. Ta. Chakur Dist. Latur.

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – 7.675 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April -2021

ISSUE No- 291 (CCXCI) H

Women's Empowerment Issues And Challenges

Chief Editor
Prof. Virag.S.Gawande
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Editor
Dr. Bharat Bhadade
Head, Department Of Marathi
Mahatma Phule Mahavidyalaya Kingaon, Latur, Maharashtra

Asst. Prof. Baliram Pawar
Head, Department Of Sociology
Mahatma Phule Mahavidyalaya Kingaon Latur Maharashtra

Dr. Prakarsh Subhashrao Deshmukh
Associate Professor and Head, Dept. Of Sociology.
Bhai Kishanrao Deshmukh Mahavidyalaya Chakur. Ta. Chakur Dist. Latur.

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

46	ग्रामीण महिलांच्या आरोग्य विषयक समस्या:एक अध्ययन. डॉ. बालासाहेब शिवाजी पवार	182
47	Women's Role In Environmental Movements In India Pawan Kumar Srivastava	187
48	Suffocation of Women After Marital life in Anita Desai's *Cry, the Peacock* and Shashi Deshpande's *that long Silence* M .Harini	193
49	Double Marginalization of Women in A Raisin in the Sun by Lorraine Hansberry Susmitha Sharu. R, / Dr.R.Abilasha	196
50	Indigenous Healing System Among The Mishings Of Dibrugarh District, Assam Biplob Bhuyan	199
51	उदरमतवाद– भारताच्या परराष्ट्र धोरणाचे सामर्थ्य प्रा.डॉ.सुपेकर वैशाली प्रशांत	205
52	महिला सक्षमीकरण व घटनात्मक तरतुदी प्रा. अमिता कृ. महातळे (विरूटकर)	208
53	ग्रामीण समुदायातील स्त्रीयांच्या समस्या आणि उपाय प्रा.डॉ. भगवान डोंगरे	211
54	स्वातंत्र्योत्तर काळातील स्त्री चळवळ डॉ. सीता ल.केंद्रे	215
55	नोकरी करणाऱ्या स्त्रियांच्या समस्यांचे अध्ययन कु. सुनिता गजभिये	218
56	अदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति प्रा. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद	222
57	भारतीय महिलाओं का विविध क्षेत्रों में योगदान एवं सशक्त भूमिका डॉ. वंदना हिमांशु जामकर	225
58	शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन छत्तीसगढ के बस्तर जिले के संदर्भ में रीता शुक्ला	228
59	Covid .१९ चे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील, परिणाम डॉ सीमा रवींद्र चव्हाण	235
60	गांधी विचार एवं जैन दर्शन में महिला सशक्तिकरण की भूमिका: एक अवलोकन लालबिहारी कुशवाहा	239
61	भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका शुभम अ. महाजन.	245
62	स्त्रीवादी साहित्याचे बदलते स्वरुप प्रा.डॉ.संतोष चंपती हंकारे	150
63	Muslim Women Empowerment And Social Development Through Education Dr. Nazhath Sara	255
64	महिला आरक्षण – एक अध्ययन डॉ. अतुल एन. खोटे	259
65	माध्यमिक स्तर पर गणित शिक्षण की उपलब्धिया निष्कर्ष एवं सुझाव सुनील कुमार शर्मा	262
66	बहिणाबाई चौधरी यांची कविता आणि महिला सक्षमीकरण डॉ. विष्णू नामदेव लांडे	268

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 291 (CCXCI) II
ISSN : 2278-9308
April, 2021

''अदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति''

प्रा. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
असोसिएट प्रोफेसर
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमामयतनगर
ता. हिमायतनगर जि. नांदेड

भारतीय आदिवासी महिलाएँ आदिवासियों की कुल आबादी का लगभग आधा हिस्सा है और पूरूषों की तुलना में कम साक्षर है। इसके अलावा, वे प्रजनन स्वास्थ से संबंधित कई समस्याओं का सामना करते है। प्राथमिक और माध्यमिक निर्वाह गतिविधियो को ध्यान में रखते हुए, भारतीय आदिवासी महिलाएँ पुरूषों की तुलना में कडी मेहनत करती है।

''विश्व के परिदृश्य में सबसे ज्यादा पुरूष और महिलाओं में समानता आदिवासी समाज में है। वर्ष १९०७ से लगातार महिलाओं की प्रतिशत में कमी आई है, परंतु आदिवासी समाज की स्थिति अच्छी रही है।'' आज भी भ्रूण हत्या, महिलाओं का शोषण एवं प्रताडना जारी है और जबतक इन सभी की समाप्ति नही होती तबतक महिलाओं की आजादी पूर्ण नही हो सकती। वही आदिवासी समाज में दहेज प्रथा, परदा प्रथा नही है, साथ ही उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त है। आदिवासी समाज में बेटियों को बोज नही समझा जाता है। हमारे समाज में आज भी परिवार पितृ सत्तात्मक पर केंद्रिय है और यही सब बुराईयों की जड है। सच देखा जाए तो पितृ सत्ता संविधान में मान्य नही है। आज परिवारों में महिलाओं का जितना शोषण होता है और कही नही। हमारे समाज में महिलाओं को आजतक अंतिम संस्कार का अधिकार नही मिला। हमारी समाज की महिलाओं का अपवित्र मानकर उसे धर्म स्थलों पर जाने से रोक दिया जात है जो यह गलत है। हम पूरूषों के विरूध्द नही है पर हमें संविधान मे जो अधिकार दिया है हम वही मांगते है।

आदिवासी समुदाय जो सामाजिक विकास के क्रम में आदिम अवस्था के अधिक निकट ह।, उनमें अत भी मातृसत्ताक परिवार पाए जाते है। जो कबील मातृवंशीय है उस मातृस्थानीय का दर्जा है, जहां पति परिवार का स्थायी या अस्थायी सदस्य होता है। पूर्वोत्तर के गारो कबीलों में तो वह आगंतुक मात्र है, जो रात भर का मेहमान होता है। जिन मातृवंशीय और, मातृस्थानीय कबीलों में मुखिया पुरूष है, उनमे भी स्त्री के अधिकारों और प्रतिष्ठा की दृष्टि से पितृवंशीय और पितृस्थानिय कबीलों की अपेक्षा इनकी स्थिति प्राय: अच्छी है। कई पितृवंशीय कबीलों में भी नर और नारी का दर्जा लगभग समान है। वहुत सारे आदिम कवीलों में विवाह विच्छेद और पूनर्विवाह का नियम है। और इस संबंध से स्त्री और पुरूष को प्राय: समान अधिकार है। पूर्वोत्तर के अनेक आदिवासी समुदायों में विवाह के बाद युवकें को प्राय: पांच वर्ष की अवधि तक ससुराल में रहकर यह सिध्द करना होता है कि वह गृहस्थी चलाने में सक्षम है।

इतना ही नही आदिवासी समुदायों में लडकी को अपना पति चुनने की उतनी ही स्वतंत्रता होती है, जितनी लडके को। सामुहिक जीवन और यौन शिक्षा के लिए 'घोटुल' जैसी प्रथाएँ मध्य भारत के आदिवासियों में प्रचलित है, जहां युवक–युवती सामुहिक स्तर पर समान रूप से कुछ समय के लिए साथ–साथ जीवन गुजारते है। अगर किसी कारणवश पुनर्विवाह होता है तो ऐसी दशा में स्त्री और पूरूष की इच्छा का समान स्थान होता है। वैसे तो आदिवासी समाज में दहेज प्रथा नही है। इस समाज में वर पक्ष को ही वधु पक्ष को कुछ न कुछ देना होता है। वर और वधू

के बीच यहां विवाह पद्धति है, यहा। कोई 'कन्यादान' नही होता। लडकी वालों के सर पर लडके वालों का कोई बोझ नही होता।

आदिवासी समुदायों में स्त्री और पुरूष समान रूप से श्रम करते है। स्त्री घर और बाहर के कामों में बराबर की भागीदारी होती है। आदिवासी अंचलों के हाट–बाजारों में पुरूषों की अपेक्षा तुलना में स्त्रियों की भमिका अधिक होती है। परिवार और कबीले की पंचायत में लिए जाने फैसलों में स्त्री स्वर का सम्मान किया जात है। पुरूष के पक्ष में जो भी बदलाव हमें दिखाई देते है, वे सब तथाकथित मुख्यधारा समाज के प्रभाव के कारण है, अन्यथा आदिवासी परंपरा में ऐसा नही होता है।

उल्लेखनीय बात यह की भारतीय आदिवासी भाषाओं में कोई स्त्री सूचक गाली नही दी जाती। हालांकि आदिम समाज में गालियों है, मगर उनके लिए अन्य शब्द का प्रयोग होता है। परिवार में बाप–बेटे में झगडा हो जाने पर जब गुस्सा फूटता है तो कोई एक शांती साध लेता है या घर बाहर चला जाता है। 'मेरी ऑखो से दूर हो जा' या 'मेरे सामने कभी नही आना' जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त कर देता है। झारखंड की खडिया भाषा में सबसे बुरी गाली है 'तुझे बाघखा जाएं। इसी तरह बस्तर में 'तुझे देवता उठा कर ले जाए। अगर क्रोध उग्रतम हो जाता है तो मारपीट या कत्ल जैसी घटनाएँ। भी हो जाती है। लेकीन स्त्री को गाली नही दी जाती।

भारत मे पुरूष वर्चस्ववादी गैर–आदिवासी समाज के सामने आज बडी–बडी चुनौतियॉ आने लगी है। आज सबसे बडी चुनौती लिंगानुपात की है। भरत में जो प्रदेश क्षिा के क्षेत्र में और भौतिक विकास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है वहां पर लिंगानुपात की वृध्दी होती जा रही है। जैसे दिल्ली, पंजाब, हरियाण, चंडीगढ में स्त्रीयों का अनुपात दर ज्यादा है। वही आदिवासी बहुल प्रांतो में यह लिंगानुपात दर काम है। जैसे– छत्तीसगढ, झारखंड, उत्तराखंड आदि। स्पष्ट है कि लिंगानुपात की दृष्टि से भारत के विकसित इलाको और तबकों की तुलना में आदिवासी समाज को दशा वेहतर है। यहां स्वाभविक रूप से यह प्रश्न निर्माण होता है कि भौतिक उन्नति और शिक्षा जैसे विकास के प्रतिमानों का मनुष्य की समझदारी के साथ या सामाज समश्या है?

ठसी प्रश्न के माध्यम से हम महिलाओं पर होने वाले अपराध और अत्याचार का विश्लेषण करते है तो देश में सबसे अधिक अपराध दिल्ली जैसे महानगर में हुए है, जहां पढे–लिखे और विकसित लोग ज्यादा निवास करते है। उसकी तुलना में सबसे कम अपराध आदिवासी राज्यों में है। मलि अत्याचारों को आंकडों पर नजर डाले ता पता चिलता कि आदिवासी समाज कि अपेक्षा अधिक अत्याचार संपूर्ण समाज में है। अंदमान के दूीप समूहों मे आदिम कवीलों की भाषा में 'वलात्कार' या 'दुष्कर्म' जैसे शब्दों के सामानार्थी है ही नही। इससे स्पष्ट होता है कि ऐसी घटनाएँ आदिवासी समाज में घटित ही नही होती।

अदिवासी समाज में भूत–प्रेत, जादू–टोना, आत्मा का किसी व्यक्ति के शरीर में आजाना जैसी प्रथाओं चलन है। स्त्री की दशा को लेकर सबसे खतरनाक डायन प्रथा मानी जाती है। इस प्रथा को पूरी तरह आदिवासी समाज से जोडकर देखा जाने लगा ऐसा नही कि यह हमारे भारत में ही है। इस सप्रथा को वैश्विक स्तर पर देखा ताए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि यह प्रथा प्राचीन काल से अस्तित्व में है। प्राचीन मध्य अफ्रीका, मिस्र, बेबीलोन के जीवन में इसके संदर्भ मिलते है। भारत मे वात्सायन के कामसूत्र में शाकिनी का संदर्भ मिलता है। शिव के पौराणिक संदर्भो मे भी शाकिनी, भैरवी, चांडीका, जोरीनी आदि नाम शक्ति उपासना से संबंधित है। वौध्द ग्रंथो और जैन ग्रंथो मे भी शकुनिका के नाम से स्त्री इस मिथक को स्थान दिया गया है। इस तरह यह प्रथा को भारत में ही नही बल्कि भारत के बाहर के देशों में देखा जाना चाहिए।

स्त्री भी एक मनुष्य है। उसमें पंखियों की तरह उड़ान भरने की क्षमता होती है। उन्हे पंखियों की तरह उड़ने दो उनके चेहरे पर जो हसी होती उससे उसे चहकने दो। स्त्रियां सूना वर्ग को भी पिछे डालती है। उनमे एक प्रकार की गति होती है जो नृत्य और वाणी गीत से युक्त होती है। उन्हे नाचने और गाने देना चाहिए। वह हमेशा पुरूष की हमसफर होती है। उन्हे अपना साथी होने का सम्मान दो। स्त्रियाँ मानव प्रजाति के वंशों को आगे बढाती है। इसलिए वह माताएँ कहलाती है। उनमें एक प्रकार की गरिमा होती है। उसे उस गरिमा के साथ जीने दो। स्त्रियों का पुरूषों ने ही विविध नाम दिये है। जैसे, देवदासी, गणिका, अप्सरा, सती, कुलक्षणा, वैश्या, वैगव्या कलंकिनी आदि। स्त्री के बारे में सिमोन द बोउआ ने जो कहा वह सच है कि "स्त्री पैदा नही होती,उसे स्त्री बनाया जाता है।"

पिछले दस वर्ष की तुलना में आज हम देखगे तो जनजातिया महिलाओं की स्थिति निश्चित रूप से बेहतर दिखेंगी। जनजातियस्त्री आज शिक्षा में भी है और रोजगार में भी दिक्कत यह है कि वह मौकत नही होने के कारण बहुत सारी योजनाओं का लाभ नही ले पा रही है। उनके लिए विकास केंद्रित सेमीनार होना चाहिए। शिक्षा को गुणवत्ता पूर्ण बनाकर और स्थानीय स्तर पर रोजगार पाने की काबिलियत से जोडकर इस स्थिति को बदला जा सकता है। आदिवासी बहुल क्षेत्र में खनिज की कमी नही है, औषधी वनस्पतियां है। आयुर्वेद की परंपरागत चिकित्सा पद्धति है। आज आवश्यकता है आदिवासी लडकियों को इन सब में प्रशिक्षित करने की। जिससे बडी आसानी से उन्हे रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए। आदिवासी महिलाओं के लिए शिक्षा कार्य बल और स्वास्थ्य बेहद चुनौती पूर्ण क्षेत्र है। जिसमें आमूल सुधार की आवश्यक्ता है। आधुनिकीकरण की नई लहर के बावजूद, भारतीय आदिवासी महिलाएँ आपनी भाषा, पहनावे, औजारों और संसाधनों मे अनिवार्य रूपसे पारंपरिक है।

भारत के आदिवासी बहुत लंबे समय से शहारी समाज के संपर्क में रहते है। और उनसे प्रभावित भी हुए है। गोंड–भील और हल्बी जैसी जनजातियाँ बाहरी दुनियाँ में हिंदुओं की तरह रहते है। मध्यप्रदेश के बस्तर जिले में अभी भी कुछ जनजातियाँ हैं जो विकास के कार्यक्रमों से पूरीतरह दुर है। यहां की जनजातियाँ नारायणपूर तहसील तक ही सीमित है। उनकी रोजमर्रा की गति विधियाँ समन्वित और अंतर–जुडी हुई है। एक के लिंग के बावजूद, प्रत्येक व्यक्ति की समुदाय कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

टाज हजारो आदिवासी महिलाएँ औरा लडकियाँ रोजगारकी तलाशमे अपने शहर से शहरी शहरों के केंद्रो की ओर पलायन कर रही है। वे शहर की जीवन शैली और पर्यावरण के लिए एकदम नए है। इस स्थिति और पर्यावरण के साथ समायोजन करना उनके लिए मुश्किल है। इसके अलावा उनका आर्थिक और यौन शोषण भी किया जाता है। प्रवासी आदिवासी महिलाओं के सामने एक बडी समस्या यह है कि स्थानिय भाषा, आवासीय आवास और रोजगार, बच्चों की शिक्षा, शहर का जीवन और पर्यावरण के साथ तालमेल आदि जैसी समस्याओं का सामना करता पडता है। इतना होते हुए भी आज आदिवासी महिलाएँ अपने कंधो पर पंख लगाकर काम कर रही है।

संदर्भ सुची :–

१.आदिवासी साहित्य:परंपरा और प्रयोजन – वदंना टेटे
२.आदिम राग– वंदना टेटे
३.द ब्लैक हिल– तूलिका चेटिया
४.हिंदुस्तान टाईम्स– ममांग दाई
५.आदिवासी संस्कृती और परंपरा